2 मार्च 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 23 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की -

साहित्यिक व सांस्कृतिक प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 12 से 24 फरवरी तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न कराई गयी।

दिनांक 12 फरवरी को रात्रि में प्रवचनोपरान्त श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई के करकमलों द्वारा प्रतियोगिताओं का उद्‌घाटन किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. दीपकजी वैद्य, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, डॉ. नीतेशजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी, पण्डित संतोषजी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 13 फरवरी को **संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता** में जिनेश सेठ ने प्रथम एवं पवन जैन व ऋषभ जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. श्रीयांसजी सिंघई ने की। निर्णायक डॉ. योगेन्द्र शर्मा व पण्डित शांतिकुमारजी पाटील थे। संचालन अनिल जैन व गोम्मटेश चौगुले ने किया।

दिनांक 14 फरवरी को **शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता** में साकेत जैन ने प्रथम, विवक जैन भिण्ड ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. दीपकजी वैद्य ने की तथा निर्णायक के रूप में डॉ. नीतेशजी शाह व पण्डित मनीषजी कहान उपस्थित थे। संचालन नवीन जैन व सनत जैन ने किया।

दिनांक 15 फरवरी को प्रात: **उपाध्याय वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में** अच्युतकांत जैन ने प्रथम एवं जिनेन्द्र जैन व चर्चित जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित विनयजी पापड़ीवाल थे। निर्णायक पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं डॉ. आनन्दजी जैन थे। संचालन सुमित जैन एवं रजतकांत जैन ने किया।

दिनांक 15 फरवरी को रात्रि में **अंत्याक्षरी प्रतियोगिता** के अन्तर्गत अभिषेक जैन व अनुज जैन प्रथम तथा साकेत जैन व शुभम जैन, सौरभ जैन व प्रीयम जैन तथा अच्युतकांत जैन व जिनेन्द्र जैन द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक श्रीमती समता जैन, पण्डित रजित शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री थे। संचालन मयंक सेठ एवं अमितेन्द्र जैन ने किया।

दिनांक 16 फरवरी को प्रात: **श्लोकपाठ प्रतियोगिता** में जिनेश सेठ प्रथम व साकेत जैन द्वितीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. रामकुमारजी शर्मा थे। निर्णायक के रूप में पण्डित शांतिकुमार पाटील एवं श्री संदीपजी छाबड़ा उपस्थित थे। प्रतियोगिता का संचालन अनुपम जैन एवं विवेक गडेकर ने किया।

दिनांक 16 फरवरी को रात्रि में **भजन प्रतियोगिता** के अन्तर्गत गोम्मटेश चौगुले व विजय जैन ने प्रथम व रिमांशु जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री गौरव सौगानी ने की। निर्णायक श्री प्रकाशचंदजी जैन व कु. परिणति पाटील थे। संचालन अभिषेक जैन व अनुज जैन ने किया।

दिनांक 19 फरवरी को रात्रि में **भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग)** के अन्तर्गत चर्चित जैन ने प्रथम स्थान एवं अमित जैन व अच्युतकांत जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित राजेशजी शाहगढ ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित संजीवजी खड़ेरी व पण्डित गजेन्द्रजी जैन थे। संचालन मयंक जैन एवं दर्शित जैन ने किया।

दिनांक 20 फरवरी को रात्रि में **भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग)** में विवेक जैन भिण्ड व सचिन सागर ने प्रथम स्थान एवं साकेत जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विपिनजी जैन मुम्बई ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल व पण्डित पीयूषजी जैन थे। संचालन सर्वज्ञ भारिल्ल एवं चेतन जैन ने किया।

दिनांक 21 फरवरी को रात्रि में **काव्यपाठ प्रतियोगिता** के अन्तर्गत विशाल जैन ने प्रथम एवं सचिन जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. नवलकिशोरजी दुबे ने की। निर्णायक डॉ. भागचंदजी जैन एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री थे। संचालन जीवेश जैन व स्वतंत्र भूषण ने किया।

दिनांक 24 फरवरी को रात्रि में **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान विवेक जैन भिण्ड व जिनेश सेठ एवं द्वितीय स्थान ऋषभ जैन ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. पी.सी. रांवका एवं निर्णायक के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्रीमती गुन्जा पाटनी उपस्थित थे। संचालन नयना जैन व पूजा जैन ने किया।

इन प्रतियोगिताओं के पूर्व दिसम्बर 2012 में कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन विवेक जैन भिण्ड, नवीन जैन उज्जैन, गोम्मटेश चौगुले एवं समस्त शास्त्री तृतीय वर्ष ने किया। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा का चिर वियोग

– अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

अस्मिन असार संसारे, मृत: कोऽवा न जायते।
स: जात: ये जातेन, जीवन याति समुन्नतम् ।।

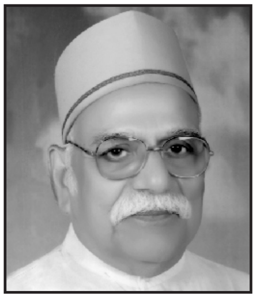

अर्थात् इस असार संसार में ऐसा कौन है, जो जन्म–मरण नहीं करता, सभी जीव जो जन्मते हैं, वे मरते भी अवश्य हैं। जो जीव जन्मा है, उसका एक न एक दिन मरण भी अवश्य ही होता है; किन्तु उन्हीं का जन्म सार्थक है, जिसके निमित्त से दूसरों का दु:ख दूर हो तथा अपने सम्यक् पुरुषार्थ से स्वयं का जीवन सार्थक हो जाये, सफल हो जाये अर्थात् जिसे जन्म–मरण के नाश का उपाय मिल जाता है, उसी का जन्म–मरण सफल होता है।

इस संदर्भ में हम श्री पूनमचन्दजी छाबड़ा के जीवन को देखते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि उन्होंने गृहस्थ जीवन में रहते हुए अपने जीवन को तो सार्थक कर ही लिया था, क्योंकि वे प्रतिदिन श्रावक के षट्आवश्यक कर्मो का नियम से पालन करते थे। वे वीतरागी देव की पूजा, निर्ग्रन्थ गुरु की उपासना एवं वीतरागता के पोषक शास्त्रों का स्वाध्याय भी प्रतिदिन नियमित रूप से किया करते थे।

यद्यपि वे संस्कृत, प्राकृत के ज्ञाता तो थे नहीं, साहित्यिक भाषा की दृष्टि से हिन्दी भी बहुत अधिक नहीं जानते थे; तथापि उन्होंने स्वाध्याय के बल पर जो ज्ञान अर्जित किया था, वह तत्त्वज्ञान के लिये पर्याप्त था।

उनमें उत्साह तो अपूर्व था ही, श्रोताओं को समझा देने की हार्दिक भावना भी बलवती थी। वे दशलक्षण पर्व, अष्टाह्निका पर्व, पंचकल्याणकों व शिविरों के सिवाय भी जब कोई प्रसंग प्राप्त होता तो वे उसके लिए भी सदा तत्पर रहते थे।

संयोग से उनके पाँच पुत्रियाँ थी, पुत्र नहीं था, जो उनके लिए वरदान साबित हुआ। कदाचित् पुत्र होते तो उन्हें योग्य बनाने में, उनका सहयोग करने में ही आधे से अधिक जीवन यों ही चला जाता। कदाचित् अयोग्य निकलता तो पूरा जीवन उसी को संभालने में बीत जाता।

संयोग से पाँचों ही पुत्रियाँ योग्य थीं, अत: अच्छे संपन्न घरों में चली गईं। छाबड़ाजी ने स्वाभिमान के साथ सभी बेटियों को अच्छे घरों में और योग्य वरों के साथ विवाह कर दिया था, बाद में व्यापार से भी निवृत्ति लेकर इन्दौर छोड़कर जयपुर आ गये। अपने जीवन को पूर्ण रूप से धर्म की साधना में लगा दिया था।

वे हम दोनों भाइयों के साहित्य को छपने के पहले ही पढ लेते थे, यदि कोई शंका होती तो पूछ लेते, कहीं प्रिंटिंग मिस्टेक होती तो उसे भी दूर करा देते तथा प्रत्येक पुस्तक के बारे में अपनी राय अवश्य लिखकर देते, जो प्राय: सभी पुस्तकों में प्रकाशित हैं।

छाबड़ाजी के दिवंगत होने से श्री टोडरमल स्मारक ने तो एक समर्थ कार्यकर्ता खोया ही है, सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज ने भी एक ओजस्वी निर्भीक एवं तत्त्वप्रेमी व्यक्तित्व को खोया है, परन्तु विधि के विधान को कौन रोक पाया है।

'जो होना है सो निश्चित है, केवलज्ञानी ने गाया है' यह सोचकर ही समता आती है। इत्यलं विस्तरेण।

– प्राचार्य,
श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर

अब एक साथी और गया...

– डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी से प्राप्त वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में कंधे से कंधा मिलाकर चलनेवाले अनेक साथी एक–एक कर साथ छोड़कर चले गये। अब श्री पूनमचंदजी छाबड़ा भी गये।

वृद्धावस्था में भी जवानी के जोश से भरे, वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में संपूर्णत: समर्पित, कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकर्त्ता पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा की कसीदा की टोपी के तले उस रौबदार मूँछों वाले व्यक्तित्व को कौन भूल सकता है; जो हमारे साथ तत्त्वप्रचार के छोटे–बड़े हर कार्यक्रम में सदा उपस्थित रहते थे।

आज भी जब मैं टोडरमल स्मारक के प्रवचन मण्डप में प्रवचन करने बैठता हूँ तो मेरी दृष्टि बरबस ही उधर जाती है; जहाँ प्रवचन सुनने के लिए छाबड़ाजी बैठा करते थे। उन जैसा नियमित एवं सतत् जागृत श्रोता मिलना आज दुर्लभ ही है।

वे केवल श्रोता ही नहीं एक अच्छे ओजस्वी वक्ता भी थे। जब वे अपनी जोरदार आवाज में जिनवाणी के सच्चे सपूतों को संबोधित करते तो श्रोता एकदम जागृत हो जाते थे।

वे न केवल मेरी सभा के नियमित श्रोता थे, अपितु मेरे द्वारा लिखी गई कृतियों के प्रथम पाठक भी थे। जब मैं लिखने बैठता तो वे आकर सामने बैठ जाते थे और कहते थे कि बताओ आज क्या लिखा ? मैं उन्हें ताजे लिखे पेज पकड़ा देता और वे उसे पढ़ने लगते। इसप्रकार वे मेरे श्रोता ही नहीं, पाठक भी थे।

वे मेरे कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करनेवाले साथी थे। जब मैं बाहर कहीं प्रवचन करता तो वे मेरे बगल में आसन लगाकर बैठ जाते थे। उनके बैठने से मंच शोभित होता था।

इसमें कोई शक नहीं है कि उनके क्षयोपशमज्ञान में जैनदर्शन का मूल तत्त्व अच्छी तरह पकड़ में आ गया था। वे यह बात अच्छी तरह समझ चुके थे कि एक त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा ही एकमात्र साध्य है, आराध्य है। जीवन के अन्तिम क्षण तक उसी का चिन्तन–मनन करते–रहते और अत्यन्त जागृत अवस्था में उन्होंने अपने प्राणों का विसर्जन किया। उन्होंने वर्षो से रात्रि में पानी भी नहीं पिया था और अभक्ष्य भक्षण तो उनके जीवन में था ही नहीं।

वे जीवन के अन्तिम क्षण तक यह मंगल कामना करते रहे कि जिसमें उनका जीवन समर्पित था, वह पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट युग–युग तक इसीप्रकार फलता–फूलता रहे, युग–युग तक इसी मार्ग पर चलता रहे और युग–युग तक वीतरागी तत्त्वज्ञान को उसी तरह जन–जन तक पहुँचाता रहे, जिसतरह आज पहुँचा रहा है।

अरे, भाई ! संसार का स्वरूप ही ऐसा है। एक दिन हम सबको भी जाना है; दो चार वर्ष पीछे या दो चार वर्ष आगे – इसमें क्या अन्तर पड़ता है; अत: हम सबको अपना जीवन इतना व्यवस्थित बनाना चाहिए कि हम प्रतिपल जाने को तैयार रहें, यदि मौत अचानक सामने आ जाये तो हमें एक समय भी यह विकल्प नहीं आना चाहिए कि जरा ठहरो ! यह काम निबटा लूँ।

लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे–की भावना से ओतप्रोत जीने और मरने के लिए सदा तैयार रहना ही वास्तविक जीवन है।●

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें – इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 620 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 69 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 28 जून 2013 से प्रारंभ होगा।

स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **देवलाली-नासिक (महा.) में 21 मई से 7 जून, 2013 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्राचार्य, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन :(0141) 2705581, 2707458, फैक्स - 2704127

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 36 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. छात्रों को यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे वे संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री आदि अनेक विशिष्ट विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान/पंचकल्याणक आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।
5. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।
11. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ ... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को दिनांक 21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। **– पीयूष शास्त्री एवं सोनू शास्त्री**

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर (रजि.) द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

(अध्यात्म के विशुद्ध प्रचार–प्रसार हेतु स्थापित महाराष्ट्र का अग्रणीय छात्रावास)

7 वीं पास प्रतिभाशाली बालकों के लिए स्वर्णिम अवसर !

साक्षात्कार शिविर : 18 अप्रेल से 21 अप्रेल 2013 तक

कक्षा 8वीं से कक्षा 12वीं तक पंचवर्षीय पाठ्यक्रम

- लौकिक शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा
- इंग्लिश, सेमी इंग्लिश माध्यम से लौकिक शिक्षा
- अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर आदि विषयों की कोचिंग
- व्यक्तित्व–विकास के लिए साप्ताहिक संगोष्ठी, पुस्तकालय, योगा, खेलकूद भ्रमण एवं कॅम्प का आयोजन
- **प्रवेश प्रक्रिया:**– कक्षा 7वीं में 60%से अधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी

5 अप्रेल 2013 तक अंकसूची की प्रतिलिपि सहित प्रवेशफार्म कार्यालय अवश्य में जमा करावें एवं 18 अप्रेल से 21 अप्रेल 2013 तक संस्था द्वारा आयोजित साक्षात्कार शिविर में पालक के साथ अनिवार्य रूप से उपस्थित होवें।

–: सम्पर्क सूत्र :–

आदिनाथ नखाते (अध्यक्ष)	0712-2750290
अशोक जैन (मंत्री)	2772378, 07588740963
नरेश जैन (संयोजक)	9373100022
प्रियदर्शन जैन (उपसंयोजक)	9881598899
डॉ.राकेश जैन शास्त्री (निर्देशक)	9373005801
पण्डित विपिन जैन शास्त्री (प्राचार्य)	9860140111
पण्डित मनीष जैन शास्त्री (अधीक्षक)	8087216959
पण्डित आदेश जैन शास्त्री (अधीक्षक)	8446551330
पण्डित सुदर्शन जैन शास्त्री (प्रबंधक)	9403646327

प्रतिभा पात्रता

प्रथम श्रेणी में

७वीं कक्षा पास

जैनधर्म के संस्कारों

को पालने में

अभिरूचि

पता:– श्री महावीर विद्या निकेतन

नेहरू पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर – 440002 (महाराष्ट्र) फोन नं.0712-2765200, 6959257

अधिक जानकारी हेतु Log in करें www.vidyaniketan.weebly.com कृपया इसे मंदिर जी में अवश्य लगाये

पू. श्री कुंद कुंद कहान धर्मरत्न पं. श्री बाबुभाई महेता दिगम्बर जैन सत् समागम पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

Chaitanya Vidhyaniketan
ज्ञान सर्व समाधान कारणं
Chaitanyadham Ahmedabad, Gujarat

चैतन्य विद्या निकेतन

चैतन्यधाम - अहमदाबाद

घर-घर शिक्षा घर-घर ज्ञान चैतन्यधाम का यह अभियान

अपूर्व अवसर

प्रतिभाशाली बालको के लिए कक्षा 8 वी से अंग्रेजी एवं गुजराती माध्यम में प्रवेश

प्रतिभा पात्रता

प्रथम श्रेणी में 7 वीं कक्षा में 70% से अधिक प्राप्तांक एवं जैन धर्म के संस्कारो में अभिरुचि

उद्देश्य

- ★ छात्रो को लौकिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक, नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा देना।
- ★ बालको को वर्तमान समयानुसार प्रत्येक क्षेत्र मे पारंगत करना।
- ★ देवदर्शन, पूजन, भक्ति, स्वाध्याय, गोष्ठीयाँ आदि से संस्कारित जीवन जीने की कला सिखाना।
- ★ अनादिकालीन तीर्थंकरो, गणधरों, आचार्यो, मुनिराजो की परंपरा से अवगत कराना।
- ★ गुजराति भाषा का अध्ययन कराकर प.पू. श्री कानजी स्वामी द्वारा बताई गई वीतराग वाणी का अध्ययन कराना।

सुविधाएं

- ➡ आवास, भोजन एवं विद्यालय आवागमन निःशुल्क।
- ➡ विद्यालय के अतिरिक्त विद्या निकेतन मे भी अंग्रेजी, गुजराती, संस्कृत आदि भाषाओ की शिक्षा
- ➡ व्यक्तित्व-विकास के लिए पुस्तकालय, कम्प्युटर, खेलकूद, संगीत, योगा, सांस्कृतिक, धार्मिक गोष्ठीयॉं, भ्रमण एवं केम्प का आयोजन

शीघ्रता करे

फार्म भरने की अंतिम तिथि **5** अप्रेल **2013**

साक्षात्कार शिविर **6** से **11** मई **2013** तक

फार्म प्राप्त करने के लिए - Log On करें।

www.chaitanyadham.com

Email: chaitanyadham@gmail.com

संपर्क सुत्र

पं. श्री सचिन भरड़ा शास्त्री - 09409274126/139

मंत्री/ट्रस्टी श्री राजुभाई शाह - 09825030606

श्री प्रतिकभाई शाह - 09825039266

ભારતનું ગૌરવવંતુ તિર્થ સ્થાન

"ચૈતન્ય ધામ"

"Chaitanyadham" On National Highway No.8, At & Post. Dhanap

Ta.Dist. Gandhinagar, Ahmedabad. (Guj.). 079 23272222

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

112

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सातवां प्रवचन

संतप्त मानस शांत हों, जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में।।

पण्डित टोडरमलजी कृत रहस्यपूर्णचिट्ठी पर चर्चा चल रही है। विगत प्रवचन के अन्त में यह स्पष्ट किया गया था कि सविकल्पदशा से निर्विकल्पदशा में, आत्मानुभूति के काल में विशेष ज्ञान तो नहीं होता, तथापि आनन्द में तो विशेषता होती ही है।

अगला प्रश्न और उसका उत्तर प्रस्तुत करते हुए पण्डितजी लिखते हैं–

''यहाँ फिर प्रश्न – अनुभव में भी आत्मा परोक्ष ही है, तो ग्रन्थों में अनुभव को प्रत्यक्ष कैसे कहते हैं ? ऊपर की गाथा में ही कहा है *'पच्चखो अणुहवो जम्हा'* सो कैसे है ?

उसका समाधान – अनुभव में आत्मा तो परोक्ष ही है, कुछ आत्मा के प्रदेश आकार तो भासित होते नहीं हैं; परन्तु स्वरूप में परिणाम मग्न होने से जो स्वानुभव हुआ, वह स्वानुभवप्रत्यक्ष है।

स्वानुभव का स्वाद कुछ आगम–अनुमानादिक परोक्ष प्रमाण द्वारा नहीं जानता है, आप ही अनुभव के रसस्वाद को वेदता है।

जैसे कोई अंधपुरुष मिश्री को आस्वादता है; वहाँ मिश्री के आकारादि तो परोक्ष हैं, जो जिह्वा से स्वाद लिया है, वह स्वाद प्रत्यक्ष है – वैसे स्वानुभव में आत्मा परोक्ष है, जो परिणाम से स्वाद आया, वह स्वाद प्रत्यक्ष है – ऐसा जानना।

अथवा जो प्रत्यक्ष की ही भाँति हो उसे भी प्रत्यक्ष कहते हैं। जैसे लोक में कहते हैं कि 'हमने स्वप्न में अथवा ध्यान में अमुक पुरुष को प्रत्यक्ष देखा', वहाँ कुछ प्रत्यक्ष देखा नहीं है, परन्तु प्रत्यक्ष की ही भाँति प्रत्यक्षवत् यथार्थ देखा, इसलिए उसे प्रत्यक्ष कहा जाता है।

उसीप्रकार अनुभव में आत्मा प्रत्यक्ष की भाँति यथार्थ प्रतिभासित होता है; इसलिए इस न्याय से आत्मा का भी प्रत्यक्ष जानना होता है – ऐसा कहें तो दोष नहीं है।

कथन तो अनेक प्रकार से हैं, वह सर्व आगम–अध्यात्म शास्त्रों से जैसे विरोध न हो विवक्षाभेद से कथन जानना।[१]''

उक्त प्रश्नोत्तर का भाव आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''इसप्रकार आगम की सामान्य शैली के अनुसार इस मति–श्रुत को परोक्ष कहते हैं और अध्यात्म की खास शैली में उसे प्रत्यक्ष भी कहा जाता है। **आगम–अध्यात्म शास्त्रों में भिन्न–भिन्न विवक्षा से अनेक प्रकार के कथन आते हैं, उनकी विवक्षा समझकर, उनमें परस्पर विरोध न आवे और अपना हित हो – इसप्रकार उनका आशय समझना चाहिए।**

१. रहस्यपूर्णचिट्ठी : मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३४६–३४७

किसी जगह एक बात पढ़ी हो, वही सब जगह पकड़ रखे और अन्य जगह अन्य विवक्षा से कोई दूसरा कथन आवे, तब वहाँ उसका आशय न समझें तो दोनों का मेल बैठाना मुश्किल हो जायेगा। अत: किस जगह कौन सी विवक्षा है – यह समझना चाहिए।

मन के अवलम्बन की अपेक्षा से मति–श्रुतज्ञान को परोक्ष कहा है; परन्तु मन का अवलम्बन हो, तब आत्मा को जान ही न सकें – ऐसा नहीं है; क्योंकि इस ज्ञान में **स्वानुभव के समय में बुद्धिपूर्वक मन का अवलम्बन छूट गया है, इतने अंश में इसमें प्रत्यक्षपना है।**

जो सूक्ष्म–अबुद्धिपूर्वक विकल्प हैं, उनमें मन का अवलम्बन है; परन्तु **आत्मा का जो स्वसंवेदन है, उसमें तो मन का अवलम्बन छूट ही गया है।** केवलज्ञान जैसा प्रत्यक्षपना इसमें भले न हो, परन्तु स्वानुभव प्रत्यक्षपना अवश्य है।[१]'' **(क्रमश:)**

१. अध्यात्म संदेश, पृष्ठ ९४–९५

ग्यारहवाँ प्रवेश पात्रता शिविर

तीर्थधाम मंगलायतन (उ.प्र.) द्वारा संचालित भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के आगामी सत्र में हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम से कक्षा सात उत्तीर्ण कर चुके छात्रों को इस वर्ष कक्षा आठ में प्रवेश दिया जायेगा। जो छात्र यहाँ उच्चस्तरीय लौकिक शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, वे हमारे कार्यालय से प्रवेश आवेदन–पत्र मंगाकर भरकर देवें। विदित हो कि 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी ही आवेदन के योग्य हैं। स्थान सीमित हैं।

इस वर्ष छात्रों के चयन हेतु प्रवेश पात्रता शिविर दिनांक 1 से 5 अप्रैल तक लगाया जा रहा है। कृपया सभी छात्र अपेक्षित प्रपत्रों, सफेद रंग के दो जोड़ी कुर्ते–पायजामे एवं दैनिक उपयोग की आवश्यक तैयारी के साथ 31 मार्च की सायंकाल तक तीर्थधाम मंगलायतन अवश्य पहुँचें। संपर्क सूत्र - तीर्थधाम मंगलायतन, भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन, अलीगढ–आगरा मार्ग, सासनी–204216 (उ.प्र.) मोबाइल – 09897069969, 09997996346

अशोक नगर में 170 तीर्थंकर विधान

अशोक नगर (म.प्र.) : यहाँ दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल में दिनांक 22 से 27 जनवरी तक 170 तीर्थंकर मण्डल विधान आयोजित हुआ।

इस अवसर पर सर्वप्रथम गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा समयसार पर, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं रात्रि में प्रवचनसार की 80वीं गाथा पर प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अनिलजी धवल भोपाल के निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल भोपाल के सहयोग से संपन्न हुये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 25 मार्च	अलवर	अष्टाह्निका–सिद्धचक्र विधान
26 व 27 मार्च	कोटा(मुमुक्षु आश्रम)	अष्टाह्निका–होली
17 से 21 अप्रैल	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
22 से 24 अप्रैल	भोपाल (मण्डीदीप)	मन्दिर शिलान्यास एवं महावीर जयन्ती

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं श्री वीतराग–विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण समिति द्वारा आयोजित

47वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2013 से 7 जून 2013 तक

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली–नासिक (महा.) में आयोजित होने जा रहा है। प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु समस्त मुमुक्षु समाज को हार्दिक आमंत्रण है। सभी साधर्मीजन इसी तिथि के अनुसार अपना रिजर्वेशन करवायें।

क्या आप चाहते हैं ?

आपके बालक संस्कारशील नागरिक बनें
आपके बालक के कंठ में जिनवाणी बसे
आपके बालकों का लौकिक–पारलौकिक जीवन सुखी बने

यदि हाँ तो -

शीघ्र ही उन्हें श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में प्रवेश दिलायें, जहाँ वे 5 वर्ष में 52 छोटे–बड़े मूल/टीका ग्रन्थों का अध्ययन करके जैनदर्शन के ठोस विद्वान बनेंगे।

हार्दिक अनुरोध

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर,
जयपुर 302015 (राज.) फोन–0141–2705581, 2707458
Email-ptstjaipur@yahoo.com

स्मारक भवन में शोक सभा

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के देहावसान पर दिनांक 18 फरवरी को शोक सभा का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

इस अवसर पर श्री सिद्धप्रकाशजी झांझरी उज्जैन ने छाबड़ाजी का जीवन परिचय दिया। इसके अतिरिक्त ब्र. यशपालजी जैन, श्री प्रदीपजी गंगवाल इन्दौर, श्री प्रकाशचंदजी बड़जात्या पुणे, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं श्रीमती पूजा भारिल्ल ने भी छाबड़ाजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए अपनी–अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की और पण्डित अनेकान्तजी जैन ने काव्यपाठ किया।

इस अवसर पर श्री कैलाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर, श्री शांतिलालजी अलवर एवं श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई भी मंचासीन थे।

श्री टोडरमल महाविद्यालय के सभी छात्र, पदाधिकारी, अध्यापक, स्मारक भवन के सभ कर्मचारी एवं दैनिक स्वाध्याय के सभी श्रोता सभा में उपस्थित थे। सभी ने अंत में दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी।

सभा का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

आगामी कार्यक्रम...

भिण्ड (म.प्र.) : में श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, भिण्ड एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 9 जून से 18 जून तक नौवां सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। अतएव जो बालबोध भाग 1,2,3 व वीतराग–विज्ञान 1,2,3 व छहढाला आदि पढा सकते हैं, हमें मोबाईल नम्बर 09826646644 (डॉ. सुरेश जैन) या 9826472529 (पुष्पेन्द्र जैन) पर सूचित करने की कृपा करें।

शोक समाचार

1. पूना (महा.) निवासी श्री शेषमलजी प्रेमचंदजी जैन का दिनांक 20 फरवरी को 82 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थे। आप देवलाली शिविर में पधारकर स्वाध्याय का लाभ लिया करते थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/– रुपये प्राप्त हुये।

2. आगरा (उ.प्र.) निवासी पण्डित पदमचन्दजी सर्राफ के ज्येष्ठ सुपुत्र **श्री निर्मलकुमारजी सर्राफ** का दिनांक 23 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में 1100/– रुपये टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्राप्त हुये।

3. जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी श्री अभयकुमारजी जैन का दिनांक 3 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के एकाउन्टेन्ट श्री जवाहरलालजी की अनुजवधु थीं।

4. दिल्ली निवासी श्रीमती सुन्दरी देवी जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द जैन (हैटवाले) का दिनांक 12 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप बहुत स्वाध्यायी थीं। श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में आपका अपना फ्लेट भी था, जिसमें महीनों तक रहकर आप महाविद्यालय की गतिविधियों का लाभ लिया करती थीं। आपकी स्मृति में 11 हजार रूपये टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्राप्त हुये हैं, एतदर्थ धन्यवाद।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त करें–यही मंगल भावना है।

ढाईद्वीप में शिलान्यास सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट एवं श्री पंच लश्करी गोठ ट्रस्ट रामाशाहजी मंदिर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 16-17 फरवरी को शिलान्यास एवं प्रभावना यात्रा का आयोजन किया गया।

दिनांक 16 फरवरी को रामाशाह मन्दिर में प्रात: रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, श्री शीतलजी पाण्डे उज्जैन, पण्डित अकलंकजी दिल्ली, पण्डित विवेकजी इन्दौर, पण्डित विवेकजी दिल्ली, पण्डित विकासजी जैन इन्दौर, पण्डित ज्ञायकजी जैन मुम्बई एवं पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन के सहयोग से संपन्न हुआ। दोपहर में श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रौढकक्षा का लाभ मिला। सायंकाल पण्डित सुनीलजी जैनापुरे के प्रवचन में 192 जिनवाणी विराजमान होने के वचन प्राप्त हुये।

दिनांक 17 फरवरी को प्रात: रामाशाह मंदिर मल्हारगंज से ढाईद्वीप जिनायतन तक 201 प्रतिष्ठेय जिनप्रतिमाओं की विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर रामाशाह मंदिर में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे राजकोट, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर में ढाईद्वीप जिनायतन की 20 हजार वर्गफीट की छत का शिलान्यास श्रीमती गुणमाला भारिल्ल के करकमलों से हुआ। साथ में श्री कान्तिभाई मोटानी मुम्बई, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं श्री मुकेशजी जैन के परिवार ने भी शिलान्यास की ईंटें रखीं। इसके पूर्व डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का लाभ मिला।

ढाईद्वीप जिनायतन में दिनांक 30 दिसम्बर 2014 से 7 जनवरी 2015 तक होने वाले पंचकल्याणक की घोषणा डॉ. भारिल्ल द्वारा की गई, जिसके मुख्य प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना होंगे।

इस अवसर पर 700 परिवारों को सिंहद्वार का मोमेन्टो एवं प्रभावना श्री रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल पूना के सहयोग से वितरित की गई।

कार्यक्रम में श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल, श्री अनिलजी कामदार मुम्बई, श्री महेन्द्रभाई भालाणी मुम्बई, शशिबाला जैन मुम्बई, श्री अशोकजी घीया मुम्बई, रमाबेन देवलाली, श्री भरतजी मोदी इन्दौर, श्री अशोकजी पाटनी इन्दौर, श्री कमलजी सेठी (अध्यक्ष-गोम्मटगिरि ट्रस्ट) एवं श्री एम.के. जैन इन्दौर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

सिद्धचक्र मण्डल विधान सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ बजरंग नगर में श्री ज्ञानचन्द एवं श्रीमती कमलेश जैन (जैनको परिवार) द्वारा दिनांक 11 से 18 फरवरी तक सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा श्री दीपक धवल भोपाल एवं श्री विवेक कुमार जैन दलपतपुर के सहयोग से संपन्न हुआ।

इस अवसर पर **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर** (प्राचार्य-टोडरमल महाविद्यालय) के साथ-साथ स्थानीय विद्वान पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही श्रीमती कमला भारिल्ल द्वारा प्रौढ कक्षा का लाभ मिला।

विधान बहुत उत्साह से संपन्न हुआ। ढाईद्वीप के सर्वेसर्वा श्री मुकेशजी जैन का तन मन धन से सहयोग था। इसमें जैनसमाज के हजारों लोगों ने सोत्साह भाग लिया।

रात्रि में प्रवचन के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों (कवि सम्मेलन, तम्बोला, इन्द्रसभा) का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री ज्ञानचंद एवं श्रीमती कमलेश की ओर से टोडरमल महाविद्यालय के एक छात्र हेतु पाँच वर्ष के लिये 1 लाख 51 हजार रूपये प्राप्त हुये।

श्री पूनमचंद सतभैया परिवार द्वारा ध्वजारोहण के उपलक्ष्य में 50 हजार रूपये दान में दिये गये। इस अवसर पर श्री मुकेशजी जैन द्वारा जयपुर से मंगाया साहित्य आधी कीमत में विक्रय किया गया तथा विदाई की बेला, संस्कार, इन भावों का फल क्या होगा तथा छहढाला का सार पुस्तकें नि:शुल्क वितरित की गई। **- पूनमचंद सतभैया, इन्दौर**

छपते-छपते...

श्री टोडरमल स्मारक भवन में विगत वर्ष हुये ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का वार्षिक महोत्सव दिनांक 22 से 24 फरवरी तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित संपन्नता की ओर है। इसके विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

प्रकाशन तिथि : 24 फरवरी 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127